© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

आज का कर्णधार

डॉ शशी सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

विश्व सभ्यता व संस्कृति का आदि-स्रोत भारत, जिसने विश्व के अनाश्रित व अपभ्रष्ट मानव को मानव-मूल्यों की पहचान कराई, जीवन की राह दिखाई। लेकिन आज कहाँ गई, भारत की वह सभ्यता, संस्कृति तथा शैली, जिसने विश्व के समस्त देशों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी थी। आज भारत स्वयं संकीर्णता व साम्प्रदायिकता के ऐसे कगार पर खड़ा है, जहाँ उसे किनारा दिखाई नहीं देता। मीलों दूर हाथ फैलाने पर अँधेरा ही अँधेरा उसकी बाँहों में सिमट आता है। ऐसे में उद्विग्न मन में उठता एक सवाल? मानवता छूट गई? खण्डित हुए सभी मूल्य, संस्कृति पड़ गई धुंधली। क्या हुआ? कैसे हुआ? क्यों हुआ, यह सब? ऐसे में आवश्यकता है कर्णधार की जो देश व राष्ट्र तथा नागरिकों की डूबती नैया की पतवार सँभाल कर किनारे तक पहुँचाए।

आधुनिक सामाजिक परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में आज का कर्णधार, या तो छद्म आधुनिकता के नशे में डूबकर, भौतिक आकांक्षाओं की अंधी दौड़ में अपने नैतिक मूल्यों की अचल सम्पत्ति खोता चला जा रहा है। साथ ही भौगोलिक, राजनैतिक, आर्थिक व साम्प्रदायिक संकीर्णताओं के मायाजाल में उलझकर, देश, समाज और राष्ट्र के विरोध स्वरूप अपनी आवाज बुलन्द कर रहा है। उसे खालिस्तान, गोरखालैण्ड, झारखण्ड और आजाद कश्मीर के लिए तो सर्वस्व न्यौछावर करना है पर राष्ट्रवादी चिंतन हेतु प्रगतिशील विचारों का, शक्ति को देश के उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए नहीं लगाना चाहता। विदेशी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण 'माईकल जैक्सन' जैसे गायक, हिटलर, सद्दाम हुसैन जैसे व्यक्तित्वों को अपना आदर्श समझ बैठता है। परिणामतः अपने देश की संस्कृति व भारतीय सभ्यता का निरादर करना ही उचित समझता है। प्राचीन काल से चली आ रही परम्पराओं को हेय दृष्टि से देखने लगता है।

आज का कर्णधार दिग्भ्रमित है इसलिए भारत को विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक व आर्थिक क्षेत्रों में अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सामाजिक दृष्टि से साम्प्रदायिकता, रूढ़िवादिता, जातिवाद, भाषावाद, अस्पृश्यता, दहेज प्रथा जैसी समस्याएँ, भारतीय समाज को भीतर ही भीतर खोखला बना रही है। राजनैतिक दृष्टि से तथाकथित राजनीतिज्ञों की स्वार्थलोलुपता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी हिंसात्मक घृणित कार्य अपना विष फैला रहे हैं। धार्मिक क्षेत्र में धर्म के नाम पर जनता को उत्तेजित कर, अपनी मानसिक संकीर्णताओं के कारण विभिन्न समस्याएँ राष्ट्र को विनाश के गहरे कुएँ की ओर धकेल रही है। यदि आर्थिक पहलू पर गौर किया जाए तो चारों ओर भूखमरी, बेरोजगारी, आतंकवाद, चोरी, लूटपाट आदि वर्तमान भारत की ज्वलंत समस्याएँ हैं। शैक्षणिक दृष्टि से भारत की शिक्षा पद्धति पूर्णरूपेण संतोषजनक नहीं है। फलस्वरूप राष्ट्रीय व सांस्कृतिक एकता का भी नितांत अभाव हो गया है।

इन ज्वलंत समस्याओं का जिम्मेवार, वह सामाजिक ढाँचा है, जिसकी जड़ें खोखली हो गई है। बहुत हद तक मीडिया, संस्कारहीनता, पारिवारिक कटाव, घुटन अनुचित संरक्षण व मार्गनिर्देश के अभाव में आज का कर्णधार उत्तम संस्कारों से वंचित रह जाता है। वह मर्यादाहीन व उच्छृंखल हो जाता है। मीडिया के माध्यम से प्रसारित होती हुई वह अर्द्धनग्न सभ्यता, आज के बच्चों को चरस, गांजा, अफीम, चोरी, बेईमानी, लूटपाट, डकैती इत्यादि की राह पर अनायास ही ले जाती है, जहाँ चारों ओर नशे का साम्राज्य

है। वह भूला देता है कि यह ऋषि-मुनियों तथा महान आत्मओं का देश है जहाँ संस्कृति सर्वप्रथम विकसित हुई। उसे मात्र याद रह जाता है वह रास्ता, जो उसे किसी काल कोठरी की ओर ले जाता है।

वर्तमान फिल्में भी युवा-पीढ़ी पर अमिट प्रभाव छोड़ रही है। आधुनिक फिल्मों में शिक्षा के नाम पर मार-धाड़, हिंसा, अश्लीलता तथा विलासिता का होता खुला प्रदर्शन उसे सही दिशा नहीं सुझा पाता। फलतः वह फिल्मी जीवन जीने का प्रयत्न करने लगता है। वह नहीं जानता कि जिसकी चकाचौंध में वह उलझा है, वह सब काल्पनिक है, यथार्थ नहीं। इस प्रकार पाश्चात्य व फिल्मी संस्कृति के प्रति बढ़ती हुई आस्थाएँ भारतवर्ष के कर्णधारों के लिए अत्यन्त दुखदाई है।

आज का कर्णधार उद्देश्यहीन, अनुशासनहीन, आत्मनिर्भरता की कमी के कारण, अधिकार सीमाओं को बिना जाने-पहचाने, राजनैतिक दाँव-पेचों का शिकार होकर, दिग्भ्रमित हो भटक रहा है। वह नहीं जानता कि अनुशासन ही जीवन की सफलता का मूलमंत्र है। वह आजाद पंछी की तरह बेतहाशा, उन्मुक्त गगन में दौड़ लगाना चाहता है। यहाँ तक कि सीमाओं का अतिक्रमण भी कर जाता है। अपने से बड़ों के प्रति धीरे-धीरे कम होती आदर-सत्कार की भावना, उसके व परिवार वालों के बीच में तलवार की धार का कार्य करती है। वह परिवार और मानव से कटता जाता है। स्वार्थ की अंधी दौड़ में हितकारी वचन भी उसे अहितकारी प्रतीत होते हैं।

आज आवश्यकता है कि हम आधुनिक कर्णधारों को आँधी जैसी गति, पर्वत जैसी सुदृढ़ता, आकाश जैसी विशालता, सागर जैसी गम्भीरता और चीते जैसी फुर्ती शैशवावस्था से ही घुट्टी के रूप में पिलाएँ, ताकि नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी के विचारों से प्रेरित होकर लाभ उठाएँ और देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करें। ऐसी युवी पीढ़ी ही समाज से सभी समस्याओं को दूर कर राहों को ज्योर्तिमय कर सकती है। यह तभी संभव है जब युवावर्ग चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ, शिक्षित तथा अधिकारों के प्रति सजग व जागरूक हो।

हमें इन कर्णधारों में मानवता का बीजारोपण करना है, जिससे यही पौधा पल्लवित व अंकुरित होकर विशाल वट वृक्ष की भाँति अपने देश पर आने वाली सभी कठिनाईयों को हँसते-हँसते वहन कर सके। इसके लिए हमें अपनी-अपनी जिम्मेवारियों का दायरा समझते हुए, आपस में प्रेम, सौहार्द, भाईचारे की भावना का विकास करना चाहिए, तभी खण्डित मानव मूल्यों को जोड़ा जा सकता है, तभी होगा उज्जवल मार्ग हमारा। इसीलिए प्रसाद ने कहा है-

'उज्जवल वरदान चेतना का,
सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं,
अनन्त अभिलाषाओं के जिसमें,
सपने जगते रहते हैं।'

ऐसी युवी पीढ़ी को हमें जागृत करना है। इन सबके लिए परिवार, देश, राष्ट्र तथा समाज का सम्मिलित सहयोग अनिवार्य है। शिक्षक वर्ग समाज की वह नींव है जो कि छात्रों का निस्वार्थ भाव से ज्ञानवर्द्धन करता है। आज राजनीतिज्ञों को भी स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर युवा वर्ग को अनुशासित, मर्यादित, संयमित होकर भूली भटकी राहों से निकालकर नए कीर्तिस्तम्भ स्थापित करने हैं। इसीलिए तो -

प्रचण्ड लालिमा से दीप्ति,
शक्ति का अतुलनीय पुंज,
तूफानों सा वेग,
चट्टानों जैसा अडिग,

बुद्धि ताकत का समीकरण
विवेकानन्द सी कर्मठता लिए,
नैतिकता की चादर ओढ़
नव क्रांति ध्वज लिए जो आता है।
वही कर्णधार कहलाता है।।
वही कर्णधार कहलाता है।।।